# कालिदास की कृतियों में राष्ट्र एवं प्रकृति

**भूपेन्द्र प्रताप सिंह**

शोधच्छात्र संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
मोबाइल नं0–9936027626

भारतीय साहित्य परम्परा में संस्कृत साहित्य का अनूठा इतिहास रहा है। भारतवर्ष विश्व का ऐसा भू–भाग है जो अपने विचित्रता, विविधता एवं भव्यता जैसे स्वरूप का उद्घाटन करता है। भारतवर्ष के प्राचीनतम अनुकरणीय अतीत का आधारस्रोत संस्कृत भाषा साहित्य ही है, जिसके द्वारा भारतभूमि की दिव्यता एवं महत्ता का परिचय प्राप्त होता है। भारतीय संस्कृत साहित्य अनेक बहुमूल्य रत्नों को धारण कर गौरव को प्राप्त कर रहा है। राष्ट्र और प्रकृति के विषय में जो आदर्श भारतवर्ष में दृष्टिगत होता है, सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल के लिये ग्राह्य है। भारतीय संस्कृत साहित्य में ही विश्व का सबसे विशाल महाकाव्य 'महाभारत' लेखबद्ध है जिसमें राष्ट्र, राजा और राजनीति का अद्भुत समागम हुआ है। महाभारत महाकाव्य की उपजीव्यता प्राप्त कर भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वान प्रतिष्ठित होते रहे हैं।

महाकवि कालिदास संस्कृत भाषा के प्रतिष्ठित आचार्य हैं। संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं यथा–महाकाव्य, गीतिकाव्य तथा नाटककाव्य में कालिदास का अप्रतिम योगदान है। जहाँ एक ओर इनके ग्रन्थ संस्कृत एवं अन्य भाषाओं में सर्वोत्कृष्ट हैं वहीं दूसरी ओर कालिदास के जन्म, काल तथा स्थान आदि के विषय मौन हैं। **कविकुलगुरूः कालिदासो विलासः।**[1]

महाकवि कालिदास की कृतियों में राष्ट्रमंगल की भावना तथा समस्त प्राणियों के कल्याण का अद्भुत, प्रभावी एवं अनुकरणीय सन्देश उपदिष्ट है। जिस प्रकार भारतीय संस्कृति, सभ्यता को संस्कृत साहित्य आत्मसात करता है वैसे ही कालिदास भी भारतीय संस्कृति एवं इतिहास को उत्कर्ष प्रदान करते हैं। कालिदास की कृतियों में परिलक्षित कल्पनामाधुर्य, अर्थगाम्भीर्य तथा सहृदयता का वर्णन विद्वानों में प्रासंगिक है। यथा– **निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु। प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मकिकिजरीष्विव जायते।।**[2]

कालिदास ने विश्व रंगमंच पर अपने जीवन्त पात्रों एवं समकालीन घटनाओं के माध्यम से राष्ट्र के बुनियादी तथ्यों का विश्लेषण किया है।[3] महाकवि कालिदास ने महाकाव्यों एवं नाटकों में राष्ट्र तथा प्रजा[4] और राजतंत्र और लोकतंत्र[5] का उपदेश दिया और गीतिकाव्यों के माध्यम से प्रकृति के स्वरूप तथा उसके संरक्षण एवं संवर्धन का सजीव चित्रण किया। **हविरावर्जितं होतस्त्वया विधिवदग्निषु। वृष्टिर्भवति शस्यानामवग्रहविशोषिणाम्।।**[6]

कालिदास ने अपनी कृतियों में विश्वबन्धुत्व तथा धर्मपरायणता[7] के दृष्टान्त रूप प्रस्तुत किया है। यथा– **या सृष्टिः स्रष्टुराद्याः.....। प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतुवस्ताभिरष्टाभिरीशः।।**[8]

राजा द्वारा प्रजा का अनुरंजन करना भारतीय राजनीति का अभीप्सित आदर्श रहा है।[9] राजा–प्रजा का सम्बन्ध, आर्य संस्कृति की प्रतिष्ठा[10], नैराश्यवाद का त्याग, यज्ञ की प्रधानता तथा पुरूषार्थ चतुष्टय रूपी अस्त्रों[11] से मानवीव सभ्यता की रक्षा का उपदेश अनुकरणीय है। यथा– **स बभूव दूरासदः परैर्गुरूणाथर्ववेदा कृतक्रियः। पवनाग्नि समागमो हि अयं सहितं ब्रह्मयदस्त्रतेजसा।।**[12]

सामाजिक जीवन में नारी की स्थिति, मानव, मूल्यों का व्यावहारिक स्वरूप महाकवि कालिदास की कृतियों में सदैव परिलक्षित होता है जो एक उन्नत राष्ट्र का द्योतक है–

**त्यागाय संभृतार्थानां सत्यायमितभाषिणाम्। यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्।।**[13]

महाकवि कालिदास प्रकृति के दैवीय स्वरूप की उपासना करते हैं। वे प्राकृतिक पर्यावरण की नैसर्गिकता, वन सम्पदाओं एवं वन्य जीव–जन्तुओं, वनस्पतियों के संरक्षण हेतु मानव द्वारा सहयोग की अपेक्षा करते हैं। यथा– **भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैर्नव– वाम्बुभिर्भुरिविलम्बिनो घनाः।**

**अनुद्धताः सत्पुरूषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।**[14]

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व के राष्ट्र एवं संगठन प्रकृति तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अनवरत चिन्तन में संलग्न हैं। प्रकृति के द्वारा आच्छादित पर्वत, पठार, नदियाँ, झीलें, वन, महासागर एवं यहाँ निवासित जीवों तथा वनस्पतियों के संरक्षण का कार्य प्रगतिवान् है। **वनानि वैन्ध्यानि हरन्ति मानसम्।**[15]

**धातुताम्रधरः प्रांशुदेवदारूबृहदभुजः। प्रकृत्येवशिलोरस्कः सुव्यक्तो हिमवानिति।।**[16]

महाकवि कालिदास की कृतियों में उद्धृत भारतीय राष्ट्र एवं प्रकृति संरक्षण के उदात्त आदर्श–देवता और ब्राह्मण में निष्ठा, भक्ति, गुरूवाक्य में पूर्ण विश्वास[17], अतिथि सत्कार की व्याकुलता, लोक कल्याण तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण, नारी के स्वाभिमान का संरक्षण, सद्भाव, एकता, वैयक्तिक, सद्चरित्रता, परोपकार तथा 'वसुधैव कुटम्बकम्' की भावना का निःस्वार्थ प्रचार–प्रसार के द्वारा प्रतिपादित किये गये हैं। अतः समाज और व्यक्ति के मध्य परस्पर सांस्कृतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एकता एवं प्राणिमात्र के निमित्त सद्भाव का अभ्युदय महाकवि कालिदास के राष्ट्र एवं प्रकृति की संकल्पना का मूल निहितार्थ है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. प्रसन्नराघवम्, 1/22.
2. हर्षचरितम्, श्लोक– 16.
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 3/52.
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 5/7.
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 5/11.
6. रघुवंशम्, 1/62.
7. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 4/22.
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 1/1.
9. रघुवंशम्, 8/4.
10. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 1/11.
11. कुमारसम्भवम्, 5/38.
12. रघुवंशम्, 8/4.
13. रघुवंशम्, 1/7.
14. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 5/12.
15. ऋतुसंहारम्.
16. कुमारसम्भवम्, 6/5.
17. मेघदूत, 1/2.